दीपमाला

राग केदारो ॥ घरी एक छाडऊ तात वि
हार ॥ राम कृष्ण तुम दोऊ मैया बऊत
करऊ सिंगार । ऊसुमति कहति आऊ
आपने है दीपमालिका नाऊ । औरे बा
लक सबे सिंगारे सुनऊ कान्ह घनस्याम ॥
खेलि हैं गांय गोप नाचत है गोपी गावहि
गीत ॥ परमानंद दास यह मंगल बेद
पुरान पुनीता ॥१॥

श्रीगोवर्द्धनधरा

रागगौडी॥ आवो हो रे ग्वालो या प
रवत की छांहि। नाचकु गावकु करकु
ऊलाहल जिन डरपो कुमन मांहि॥
जिन तुम्हारो पकवान खायो है सोई र
छा करिहै॥ परमानंददास को ठाकुर
गोवर्द्धन करि[illegible]है ॥१॥

अन्नकूट

रागमल्हार। वारी मेरे कौं क्यौं प्यारे अबहिं दिननु बारे कैसें अति भारो गिरि राख्यौ धरि करपर। कौमल भु जानुमारी यातें होंनें यभीति भारी देखि देखि कर लेहु दोयइ धर धरां। स्याम मइं बलकी नौ छिनुमें ज गाय लीनौ आये गाय ग्वाल सब सरन मेघ केउ रु। नीकौ हौं कहौं उपाय मिलि करिहें सहाय लेकुं बोलि ब लिगई पिंग नैयाइ लधर। नें ऊंडें नैं बीम्वपारयो अोयान अंधया यौ बरखत इंधन सात दिन एक रु। वलुरु मुक्रप्रभु गिरिधारी ब्रज राखि

(लयो इंद्र रिस साय आय परयो
बेरन नितर ॥ राग नट। कहो मेरे
बारे कोन्हो गोवरधन के सें उठाय
करि लीनो। एकहि हाथ आके
लेहि गहे सु देखो ऊने कोवल
बल दीऊ ऊनदी नो॥ सुंदर कर
पांपति [illegible]गुंबति फूकति उर सा
वति आंवरा प्रेम उर लीनो॥
गोविंद प्रभु यते लरिका लरिका
यतें ताते ब्रजऊ नम न सुख कीनो।
॥२सोरठी॥ को न्हो टेरि कहत ब्रजबा
सी। इंद्र रिसाय बरख्यो ब्रजऊपर

नेकुनदेत उसासी॥ बिनु समरथ
बकी ननंद सुत मेटनकौं दुखरासी।
तब गिरिवर कर धर्यो गोविंद प्रभु
मथचार ग्रोखिसासी॥२ नंद नंदन
गोवर्द्धन धार्यो॥ ब्रज पुर प्रलय क
रन कौं सुरपति पठये कौ विसयबा
रो। सात दिवस मूसल धार बरखत
एकौ छिनु न बाचि पार्यो। गो पीखा
ल गायगो सुत सब आप बल राखि
गरब टार्यो। छाड्यौ सब अभि
मान अमरपति आपनो बिगारु हि
य बिचार्यो। जनन दास प्रभु से त

परतकों आयपर्योपायन हारयो
॥४

रागमल्हार। गाजेररे मेघबारे बलवंता।
विच्चे रवीजे करे झांकार। हरिहिलोगो
वेईतथरीयो गोकुलवत्योमियजय
कार। कोप्योइंद्र आहारा ऊपरि महो
छव माटे मघवा मन्ना। हेलावें गो गो
पऊ झावो वेगे वरसो धरतलपन्त।
प्रवाहपडे अति वेगे धउधडी। त्रूटे
टूकप ऊपर वतनां वडे वृक्ष समूलां जेडी
। पाणी मां हिं वहे वसुधातलयमुनां जे
लस्छलराकलस्यो। अतुलीबलश्रा
कोमपुरंदर दे खबी आबीलागोपाय।
गणेनारसे आगमगुणगोपी आब
लाऊलट आगनमाय।

काह्नजीयें गोवर्द्धन कर धरीयो ॥
सकल सुंदरी आंप रिवरीयो ॥
एक कर शींगडू वायरे वाळिमो
बीजे कर नाखन खायरे। त्रीजे क
र वेणु वायरे चोथो कर चारे गायरे।
इंद्र मद छेदवा रयारे। आ पुला
सऊन कगारयारे। नार सै आव
स्वामी तारयारे। देवा आवागमन
निवारयारे ॥

6

रागरामग्री

ओ ऊ म्हारे दीवाली रे दीवाली॥
म्हारे घेरि पधारस्या वनमाली।
घणां दिवस ना तापरा मा व्योग्रे मे वो
सावी। ऊलड़ लमलड़ ले करो रे दीवड़ा
मोतीडे चो कपूर वोरे। मानिनी ओमि
ली मंगल गा ओ ढोलद मांमां वाओरे।
मस्तक मुकट पीतांवर सोड़े चा पांवो
सर लड़े वेरे। नरयां ते बोलग छेरू
सऊलवे चो वा चंदन मड़े के रे। मनो
थकी धांरे सां मघी ओऊ तो हारा
गुण गा कडी येरे। नारसै ओ आ वा स्या
मी लड़ऊ मो ग्रे म्हारा मे हिरधान वि
ऊरी येरे॥

रागरामगी।श्रीगोकुलघेरिरदी
वाली।खेलनबा।ल्यावनमाली।।
वेणुवाये रेरसाली।पीतांबरपल
वेटवाली।शाणगायोगोवागोवाला।
मड़ामड़ोछवमंगल ब्रज बालां।।
नेदयशोदानेलागेपाय।माता
कहेलोगायवरावाऽाय।ऊयरदे
वजलोयहुराये।हरि आगसेना
रसैश्रीगुणगाय।।

६५

8

श्रीकृष्णः शरणंमम। रागवसंत। हरिरिह
ब्रजयुवतीशतसंगे। विलसतिकरिणीग
णवृतवारणवररतिपतिमानभंगे। ध्रु०।
विभ्रमसंभ्रमलोलविलोचनसूचित
संचितभावं। कापिदृगंचलकुवलय
निकरैरंचति तंकलरावं।१। उरसिनि
वेशितचापलमोहननिधुवनशा
लीरमयतिकामपिपीनघनस्तनवि
लुलितनववनमाली।२। स्मितरुचि
रुचिरतराननकमलमुदीक्ष्य हरेर
तिकंदं। चुंबतिकापिनितंबवतीक
रतलधृतचिबुकममंदं।३। निउपरि
रंभेरूतेनुकृतमणिवीरूपहरिसविला
सं। कामपिकापिबलादकरोदग्रेकु
तुकेनसहासं। कामपिनीवीबंधवि
मोकससंभ्रमलज्जितनयनारमते

संचरति सुमुखि बलादपि करतलेन धृत
नितम्बवसना।५। प्रियपरिरंभविपुलपु
लकावलिद्विगुणितसुभगशरीरा।।उ
द्गायति सखि कापि समं हरिणा रति
रणधीरा।६। क्लिष्टमसंभ्रमगल्लेद
चलमलयांचितमंगमुदारं। पश्यति
सस्मितमतिविस्मितमनसा मुहुरा:
सविकारं।७।। चलति कयापि समं स
करमुद्रमलसतरं सविलासं।राधेत
व पूरयतु मनोरथमुदितमिदं हरि
रासं।।८।। ललितलवंगलता
परिशीलनकोमलमलयसमीरे। म
धुकरनिकरकरंबितकोकिलकूजित
कुंजकुटीरे।।९।। विहरति हरिरिह
सरसवसंते। नृत्यति युवतिजनेन
समं सखि विरहिजनस्य दुरंते।।
१०।। उन्मदमदनमनोरथपथिकवधू

जनजनितविलापे ॥ अलिकुलसंकु
लकुसुमसमूहनिराकुलवकुलकला
पे ॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनव
दलमालतमाले । युवजनहृदयविदा
रणमनसिजनखरुचिकिंसुकजाले
॥३॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेस
रकुसुमविकासे ॥ मिलितशिलीमु
खपाटलपटलकृतस्मरतूणविलासे ॥४
विगलितलज्जितजगदवलोकनतरु
नकरुणकृतहासे । विरहिनिकृंतनकुं
तमुखाकृतिकेतकिदंतुरिताशे । ।५।
माधविकापरिमललिते नवमालति
जातिसुगंधौ । मुनिमनसामपिमोह
नकारिणितरुणाकारणबंधौ ॥६॥
स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकु
लितपुलकितचूते । वृंदावनविपिने

परिसरपरिगतयमुनाजलपूते॥
७॥श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति
हरिचरणस्मृतिसारं। सरसवसंतस
मयवनवर्णनमनुगतमदनविकार
रं॥८[illegible]११।

खेलत बसंत बर बिक्लेस। आनंद
के दगोकुलसुदेस। श्रीगिरिधर गोबिंद
संग। श्रीक्कालत क्रकिनिर खतअनंग॥
२ श्रीगोकुलनाथ अनाथनाथ। रघु
नाथनवलयदुनाथसाथ॥ श्रीघं
नश्याम अभिराम धाम॥ श्रीकल्या
णरायपूरनसुकाम। मुरलीधरप्र
भृतिसमस्तबाल। सेवकविचित्रसे
वारसाल॥ बाजततालमृदंगचंग।
उडतगुलालअबीररंग। श्रीगिरिधा
रीखेलें आय। लघुगोपालबलिहा
रीजाय॥ १

५०

श्रीपंचमीपरममंगलदिनुमदनम
होत्सवआउ।। बसंतबनायचली
ब्रजबनिताकरिपूजाकोसाज।।क
नककलसजलपूरिपढतिरितुकाम
मंत्ररसमूल।तापरधरीरसालमंज
री आवृतपीतदुकूल।चंदनअगरु
कोकुमृगमदघसिनवकेसरिघन
सार।नानाकुसुमधूपनीराजनबिबि
धभांतिउपहार।बाजततालमृदंग
मुरलिकाबीनापटहउपंग।रागबसं
तमधुरसुरगावतउपजततानतरंग।
छिरकतअतिअनुरागमुदितगोपीज
नमदनगोपाल।मानहुंसुभगकनक
कदलीदलमधिराजततरुणतमाल।
हरिबिधिमिलिरितुराजबधावत
सकलघोषआनंद।हरिजीवनप्रभु

१५२

गोवर्द्धनेऊ ऊ गोकुलचंद ॥१

५१

देखिवसंतसमयव्रजसुंदरितजि
अभिमानचलीवृंदावन। सुंदरता
कीरासिकिसोरीनवसतसाजिसिंगा
रसुअंगतन। गई तिहिठोरदेखिकुंचे
दुमलताप्रकासितगुंजितअलिगन।
जनदासप्रभुगोवर्द्धनधरमिली
कुअरिराधाकुलसितमन॥१॥

चलिवनबहुतमंदसुगंधसीतलम
लयसमीरे। तबपथ्यनिहारतइसखि
हरिसरजातीरे। बहुदसाफूलेलता
द्रुमउरखितसरीरे। तबबूरनहितस्या
मसुंदरधरतेपटपीरे। विविधसुरअ
लिगुंजकूजितमत्तपिककीरे। तबमि
लनहितनंदनंदनहेअतिअधीरे। दा
सजनलालगिरिधरकरतउतनसी
रे। तबविरहव्याकुलगोवर्द्धनउद्धरनधीरे
॥१॥

स्याम सुभग तन सों मिलत छोटे नीकी
लागी चंदन की। मंडित सुरंग अबी
र कुमकुमा अरु सुदेस ऊबंदन की
। नंददास मदन तें न मन बलि हारि
की ये नंद नंदन की। गिरिधर लाल
की बिधि मानों युवती यूथ मन फंदन की
॥२॥ आई रितु बसंत फूले कुसुम
कानन कोकिला समूह ति गावत बसं
तेहु। नवरंग करत मिलत सब सुरन
यो उल्लासत तन मन सब कों तेहु॥ मुदि
त रसिक जन उमंगि भरे हैं न हि पावत
युवति सुख अंतेहु। नंददास प्र
भु गोवर्द्धन धर हरि आसर मिलि गि
धरन बके तेहु॥ ३॥ युवति निसं
२२ ग खेलत फागु हरी। बाल कवंद करत
कोलाहल सुन तन का नपरी॥ बाजे

नउपम दंगबसुरी किंनरी सुरकोमलसरी। तिनकें मिसे सुघमनंदनंदन मुरली अध रधरी॥ अमकुमवारि अरगजाविबि धमिलायकरी। पिचकाई निपरस्पर छिरकत अतिआमोदभरी। दूर नेहा रबीरकाटतजिरिउडांतडुंथरनिद री। काहूनंहीसंभारकीपारसबतन सुधिबिसरी। अतिआनंदमगनन हिंजानतबीततजामघरी। अमनदा सबजुगोवरधनधरसबसुखदेनिब री॥५॥ उतबंदननव अबीर अमकुमाखेलतबसंतबनलाल गिरि वरधरन। मंडितसुअंगसुभस्याम सोभितसखितमनकुमन्मथबान सांजिआयेखरन। तरनितनयातीर

ठोररमनी अतिद्रुम लता कुसुम मुक
लित सुजा नाबरनं। मधुर स्वर मधुव
गुंजार मधुरस लुब्ध पिक सबद ला
गेव कुदिस कोलाहलकरनं। आई
बनिबनि सकल घोष की सुंदरी पहि
र तनकनकनवधीरपट आभरनं।
मधुर सुर गीत गावति सुघर नागरी
चौकलेते मुदित कुनित नूपुर चर
न। बदन पंकज अधर बिंब सो मि
त चारु कलकत कपोल अति वप
ल कुंडल करन। दास कुंन नप्रभु
घोषसौ भग सीम नंदनंद न कृ और
युवतिजनमनहरन।।६।।

रागवसंत

४२ आगम

केसर छीट न विर वंदन र उस्याम सुन गत न सोडे। बीचर बोवा लपटा नी उ पमा कों तहां कोहे॥ इ दि सुखवनेव व संत के औसर राधा नागरि जोडे। चतुर चतुर गिरिधर न लीलछ बि कोटिक मन्मथ मोहे।।१

राग वसंत

श्रीगोवरधनके सिखर चारुपरफू
लीनवमालतीमाय।।प्रफुलित
फलदलसघनमंजरीसुमननसुसो
भावकृतनाय।कुसुमितकुंजर
सेरीद्रुमनिझरनझरतअनेक
नाय।छीतस्वामीव्रजयुवती
यूथमेंबिहरतहांगोकुलकेप
य।।१।।

खेलत होरी लाल उठौं राधे हरि के संग बसंत। मदन गोपाल मनोहर मूरति मिल्यो भांवतो कंत। कौन पुन्य तप को फल भामिनि चरन कमल अनुराग। कुंवर नंद कमला को बल्लभ कनक कहि मिल्यो सुहाग। इहि कालिंदी यह वृंदाबन यह तरवर की पांति। परमानंद स्वामी सों बिहरत थोरी नाइ राति॥ १ खेलन फागु
न चली लाल संग खेलन फागु चली॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा छिर
ग कत थोबली। राती पारी चोली पहरें नूतन कुंबकसारी। मुख हि तें बोस नैन ब चरि काजर दे तिभांवती गारी।
रितु बसंत आगम रितु नायक सोबन

भोर भई। छिरकन चली लाल गिरि
धर कों नंद के द्वार खरी। ता ल प
खाऊ बेनु बांसुरी गावति गीत सु
हाये। नंद कुमार नवल ब्रज ब
निता नि केसि चोंहटें आये। देख
कुआय कछु की लीला कौउ न
गोकुल मांही। कहत न बने दास प
र मानंद यह सुख अनत बनाही।
२॥ सहज प्रीति गोपाल हि नावै।
सुख देखे सुख होत सखी री प्री
तम नैंन सों नैन मिलावै। सहज
ल प्रीति कमल नि अरु भानें सहज प्री
ति कुमुद नि अरु चंदे॥ सहज
१५ प्रीति कोकिला बसंतें सहज प्री
ति राधा नंद नंदे। सहज प्रीति

राग बसंत

18

क बातँऔकस्वांतेसढुअग्रीतिधर
नीऊलधारे। मनकेमवचन
दासपरमानंदसडुऊग्रीतिक
छावतारे॥३॥

देख्यो वृंदाबन श्री कमलनेंन। आयो रे
मदन गुन गुदर देंन। नव दल सुमन अनेक
रंग। ललित लता संकुलित संग। करध
नुधरि कटि कसि निषंग। मानो बने सु
भट मसिक व ख ओंग। कोकिल कुंजर
हंस मोर। रथ छेल छैला पद ख र ब कोर।
धुंऊ पताक तरु तार केलि। निकर नि
सान नेरसव र स्रेरि। धुपि धापि धरत
मानो तुरंग गात। अति तेउ बसन बा
ने उडात। सूरदास यों बदति बाल।।
काम रूप न सिव कोथ काल। फिर
खिते बपले लोचन बिसाल। अब आप
नो करि थापी ये गुपाल।।१ ऐसो पत्र प
त्र पठायो रितु बसंत। तजो कमान मानि नि
तुरंत। नूतन कागद अंब पात। दोति

कमल विमल भ्रमर गात। लिखे है का
म के बीन चाप। ता पर दई ससि अ
नेग छाप। मलयानिल पठयो इहि
विचारि। बाचें सुक पिक सुनहु नारि।

प्रथम दिवस ऋउ वसंत पंचमीमु
खसखी घर सोहे। ते पूछे सर्व सुंदर
यां रे जहां हरि तूं मन मोहे। फूलउ प
गरकरा विपधिनी के सर केलवी न
रावे रे चोवा चंदन कस्तूरी छांटणां
छंटावे रे। सोना पाटपट पट पथरावे
वाइा ल्ला ने पधरावे रे आंबला किंसु
कमुगट मस्तके धरी अति शेष नणावे
रे। फिर जीवे तूं वालि मारे कोई दिवसं
चा तर मे जेरे नारसै आं स्वामा थिर थई
रहे जे नो मिनी भुवन मे जे रे। ।१५।
नव लो वसंत कोइा न कूआर ने नेलो
पयो सहाय। ये हम्भूं वा लो विलास
करे वा करतो विविध उपाय। ते सुंदरि
घर घूघट त्यजि रवे खे मिली समु
दाय। जेइ नाम्नुरवम डु वचन अधर

यां आघेरां न विआयने ते श्यामासंग
तें आलापी बावर गायेरे ॥ नंद जशोदा
निरखी हरख्यां आनंद उर न समायेरे।
इवे पुत्र परणा व्यो कोई ये नडीतो परना
रीरति थायेरे। असरयो रीति रत्ना यर
रसमे सेतु आरोने घी आयेरे। नारसे
योउपके उरडी त्यडा बांधी वेल्गांन
डायेरे ॥ २ ॥ मस्तुणा विरे सुंदरी नें
रितु वसंत। यडां सगे मंदिर न आवे
कंत। आगे हुं आमाइरे हुं जराय ॥ ते
मांहें अंगलाग शेमलय वायु। पछे उ
पचार कर वानथी उपाय। आ घांध
शीशशी कहो संदेस। लताविवर न
करे प्रवेश। करे प्रकाश आरे वसे दे
श। द्वार रहीने वारो नवर पांति। हो
केअरलवेलडी कुसुम जाति। केती

रागवसंत

मधुकरगुंजारवो कोयलमाति । सुंदरीनो स्छतिरागवोए प्रकार । नाथनार सैन्यानो आवोहार ॥ ११ ॥ ३ उप यिना मिलारी नीमकरने नारि ॥ २ ॥ रसभरि रंगते लाडो यमुनाके मनोला डोलीरमे रसाली । मृगमदचंदनहरिजीने छांटेधारेथा बली आली । अबीरगुलालेअगर रसउन्नेमकुछालेवनउनारी । केलिकला रसश्याम मनोहर श्यामा मदनमुरारी । मलीछेतेवउतेवउरिरंगरलीने बाई साही । वृंदावनमहारासरमंतां वेणु मधुरसुर वाही । हाथ्या हरिजीत्यांउ नेगोपालोपालाउ विराजे । नारसैन्यां वोस्वामीमले मिलीयो सेकवसनविरद छाजे । ६ ॥ आवो हैलीहोली रमीए वृंदावनमांसांमलीआसाथे ।

बाथे बधियां लीजे। कौण झारे कोण जी
तेरे कांदान जी को ण सपराणं दीसे॥
लडथ आ नाथ बाथ बलनीडी अफु
लितवदे मुख बाली॥ ईड्डेड्डे हरिजी
यें झाग्यूं हथिह थिदे करताली। वृं
दावन वीट्ठल ग्वाल बोला वेवस्त्र
लीधां ऊलाली। नाहासे नारिवृंदा
वनमांहे मडुलो रव नेमाली। रास
विलासस कृष्णा मारामारं गेराती॥
नारसें आ चास्वामी व संतर म तां मा
निनीयां मदमाती॥५॥ छांरणां छुं
टीवीवाहा जोर म वानें आवे। सोल
सहस्त्र गोपीमिलीनें आनंद गावे। क
नक कचोले जरी कस्तूरी घोली॥ गउ
५८ गाउ तीपटोलीपहेरे आभरण बोली॥
नारसैयाचा स्वामी साथे रमे मांजर जो
३ नंदनानंदन साथें रमश डोली सी॥६

केसूअ रांता नेरितु राती कोयल डीवन
वासेरे। मानिनीयां यौवन मदमाती मा
धव वरण उपासेरे। मोरयो अतिसइ
कार मनोहर नवहु मस घन सुबेली। के
लिकलारम रूपा मनोहर गायेसखीला
डेली॥ ध्रु धनि र रे यमुनानी तीरे धनि
वृंदावनसोहे। नारसै आवो स्वामी
न लै मिलीयो हाठे उ सुरनर मोहे॥
७॥ रातारकरनख कामिनी आंबा
राता अधर सुदंत। राती बोलाखूनउ
येराता कपोल हसंत। राती पटोली पा
येरहै लाती राता फूल केर लहदे।
परोली ... राता ...
। रातो गुलाल कछाल ती अबलो अ
हिर अंम वेद वदे। राता मांग शी इ रेन
र यारा ताकुंम कुमरोला। राता कंचुक

कमणाकशोरा तो मुखते बोले ।। काकउ
रा तो कामिनीयें [illegible] कामिनीरा
तो कुलगुणे । शारखा शर खूं सकको
रावूं नार सै श्रोरा तो दुखिस्ले । ८ ।।
वसंत रितु नीकूं बलिहारी नारि निरं
ऊंमाफागुर मे । माधव सखा सदि
ते गहर घति अप्रम अंबुऊ मां भ्रमर जे
मे ।। कनक कलशा केसर जरी रपू डें
डी मस्ता वाढोले । करतल जेजेरी मीखुं
उ श्रृंगाररस मुख लोचन ऊपर रोले ।।
मन भावंता वचन परस्पर खनिता वेद
विलास करे । लउ सउ तो जाउ कउ जघु
वे यधाई रसकको नें बाथ जरे । मा
सूनणदर ठा डाउ मरां मर्यादा अनुस
रतां । ते कहे वा लो व स्फरम वाऊ ई येमो
डे घूघट अे धरतां ।। नारसै श्रो स्वामी

राग वसंत

निलन व ली वे रें वि चित्र लीलाके लिकरे। ए
सहुरी ओक उमां ऊँ आ वे पुरूष पल्ल
सद्रुऊँ वीसरे॥ २१॥ नवा पत्र प्रक
ट्यांनवंवनद्दीसे। निरखवागोपीनूं
मनहीसे। मोरी या वृरखकोलांबमा
राऊँडनोपीउ परदेसमऊीवे नारी॥
फलीनालिने केलिकर णीरसाली।
सुणीम धुपगुंजारमुधि गई रे बाली।
फूलया केसूवसी वेलिजाती। वसंत
रितु मानिनी मत्त माती। हंसेकोयल
मधुरखा हू बोले। हरि विना वाध्य
सहूवन्यतोले। कुसुम ग्रंथेरे मानिनी
वेलिमरूआ। नेलो पूजम्गूं गोपीवर
नाथगिरआ। जाई जूई केतकीवेलि
वारो। गुलालनोपरिमल अत्यंत
सारो। एहवीरूउीमानिनीम केचाली।

नारसै आवो स्वामी वल्लभ नाले।।।
।१०। आँबो मोरी आसखि वसंत
आव्यो बावना चंदन गरी कचोली।
आपणो नाथ सूं रमी ये होली।।का
नचोरी नेना कि मोती। नारसै आ
स्वामी नें ढूंडोती।।११।

रागबिलावल। गोपीनंदरायघरमांगन
फगुआंई। प्रमुदितकरहिं कुलाहलगा
वतिगारिसुहाई। तिनमें मुख्यराधिका
लोगतिपरमसुहाई। अबलाएकआगम
नीआगें दईपठाई। कुसुमनिआतिसु
दरसोभातरभुवनबुलाई। खेलकुंदसकु
निसंकसकेनानकुकेनिकाई। बकुमोलीम
निमालसबनिदेहोंमनभाई। मनिमालाले
कहाकरें गिरिधरदेकुदिखाई॥ बिनुदेखेसु
दरमुखनाहिनेपरतरहाई। मातपितापति
सुतसईलोगतरीविषमाई। सुनिकैप्रेमबच
नहोमोदरदईदिखाई। घरमेतैंघनस्याम
लेआसरिभागिनिस्याई। नखचिखसुंदर
सीमरूपलावनिअधिकाई। रहीकुरुबधूनि
हारिरंकमानोंनिधिपाई। अगमासबंदन
बंदनचहुदिसतेंलेधाई। जरतिमांखतेलाल
हिकरनिकुनकेपिचकाई। मंडितकरहिके
पोलएकसेकेरूलधाई। दरसपरसपिय

न अतिसे सुंदरि सबलपटाई। आलिंगिं बु
बनरसन हियुरकतिसुरझाई। कुचनुअ
बीचकी खमखि अतिश्रमकी रुपटाई।
दंपतिसौंजगसंपतिको अपीवतन अ
घाई। अंचरसों पटझोरतिरीझिसकु
चिसिरनाई। इकलीला अतिललितसु
तौनंदरानीहिलोई। इरखितऊदितमुदि
तेसबहिनकीकरतिबडाई। इकुमेरे आ
गनगृहखेलो करीनितमाई। पदुकुअन
अौ नेबन चोलीदियमगाई। जसुमति
मनप्रफुलितअतिसुंदरिसबपहिराई।
निकसीदेतिअसीसजियोतेरोगिरिधर
माई। नेनं श्रवनेसुखभयोलालकीकी
रतिगाई। इहिब्रजमाधोदासरहोनि
तनंदढुहाई ॥१॥

नंदरायललाेतुम राधारसबस कीने हाे
ब्रजरायलला। इहु सुरत समागमनी की
हाे। हाेंकइ तितुम्हारे जियकी हाे। इइकाे
ककलासबजीने हाे। तातें तुम्हारें मनमानें
हाे। इइअति छिनु नौतन लागे हाे। ज
याे बिकेस मदन फिर जागे हाे। इहनख
सिख परम सुदेसा हाे। कलमदन मनाेहर
जेसाहाे मुरलीधर काे मन माेहे हाे। यह गै
लत पियसंग साे हे हाे। यह जाेगसुहागि
न पूरी हाे। घनस्याम सजीवन मूरी हाे॥ यह
खेलन साे है हाेरी हाे। बर संगलियें सतगाे
री हाे। मिलि बंसीबट तर आई हाे। सबसा
जफाग काेल्याई हाे। सतपुलिन तिरीछी धा
ई हाे। कर कनक की पिव काेई हाे। गिरि
धरन कलपतरुतीरा हाे। संग गाेपकुंअर
बलबीरा हाे। तहां ताल बांसुरी बाजै हाे॥
काेकु बाेलत हसत नलाजे हाे। तहां उत

गुलालन्त्रबीराहो। चोवा ऋ[illegible]रगजऊ

मकुंमनीराहो। नवसतस्रजि ज्ञाईगोरी

हो। पतिमातपिताकीचोरीहो। कलगा

वतिमीठगारीहो। तहांनरतिनरावति

नारीहो। रसरवेलमच्यो अतिभारीहो।

रंगरंगिनहीनीसारीहो। एकहोडाहो

लैबोलेहो। लटकतिपियकेसंगडोलेहो।

ऊचेकवेगोपालकरपरसीहो। सबसु

रवपियप्यारीवरसीहो। एकनोवेतगा

वतिधावेहो। पकरनिपियकोंनछिपा

वेहो। श्रमछूटिगईउरगातीहो। सुंदरि

मोहनसंगमातीहो। वंशावलिपियसं

गदोरीहो। राधापकरेहरिकोरीहो। ए

कअंचरगांठिसुजोरीहो। ललितादिस

खिनितिनतोरीहो। तेबसुगहगहकोपा

लाहो। छीनीमुरलीअरुमालाहो। नेंन

अांजिमुरवरोरीहो। हसितारादेति

किसोरीहो। तुम इन आंखीयनि केतारेहो।
धनजीवनप्रानहमारेहो। मनको मान्यो
हमकेरिहेहो। नहिलोकवेदतेंडरिहेंहो।
तबसखाछिजावनआयेहो। मिलिसु
बलसुदामाधायेहो। फगुआलेमोहनमे
लेहो। इहफागुनलोबिधखेलेहो। बृख
भानुजेमारजीतीहो। इहप्रगटप्रेमरस
रीतीहो। कंचुकिकसटुटिलटछुटीहो।
मानोंमदनसुरतपथलूटीहो। बिधुरा
मोतिनिमनिमालाहो। फिरमुदितस
कलब्रजबालाहो। अंगअंगअनंगते
मोहीहो। यहखेलतपियसंगसोहीहो॥
ब्रजगोपिनिकोधनिजीयोहो। राधामो
हनबसकीयोहो। इहलीलात्रिभुवन
भावेहो। जनमाधोयुगरगावेहो॥

१११

नंदसुवनब्रजआंवतें फागुसंगमिलिखे
लेऊ॥ आजइमेतुमैंसोनिकीओयुवती
दलपेलऊ॥ रसिकसिरोमनिसांवरो
श्रवनसुनतउठिधायेऊ॥ बलसमेतसम
बटेरिकें घरघरसखाबुलायेऊ॥ बिबिध
भांतिबाजेबजेतालमृदंगउपंगाऊ॥
डुंडुभिझांझरुझालरी आवजमुखवं
गाऊ॥ उतेतेंनवसतसाजिकें निकसी
सबब्रजनारीऊ॥ झुंडनिआइमिलिकें
गावतिमीठीगारीऊ॥ केसरकुमकुमघो
रिकेंभाजननरिभरिल्याईऊ॥ छूटीस
नमुखस्यांमकेंकरनिकनकपिचकाई
ऊ॥ उतहिसमाजगोपालकेंपरमधी
रसखेलेऊ॥ चोवामृगमदसानिकें
युवतियूथपरमेलेऊ॥ सोभितबाले
केबृंदमेंहरिहलधरकीजोरीऊ॥ उतहि

ने१ चतुर चंद्रावली सब गुनै धि राधा गोरी॥
सोबदये लै ललिता कहै औब पगुन विलो
डे टारो॥ उत नायक इत नायका कोकोउ
तेको डारे॥ रिके परस्पर देखि ये रवे
लेमच्यो औति भारी॥ इत उत औ कुंट
नमान हौं बौं रवपरी नर नारी॥ युवती
ग यूथ दल पेखि कें छैं किसुब लैं हिलानें॥
कंठ उपरें नामें लिकें रवें चित्रापबस
कीनें॥ सुनुकुसुबल सांची कहै तोम
लैं छूटन पाओ॥ कुलबल बानके
बांनिकें डलधर को पकराओ॥ बकु
रिसि मिटि सब सुंदरी सकरख न मि
लि घेरे॥ फेंट गही चंद्रावली तब त्रल
टि सख नितनहै रे॥ सो धोनां वे सोम
तें एक काजर लै करिधारे॥ मोड़ने मु
रि डुसिकें कहें देखो दाऊ आंरिव औ

गाईजू। फिरि प्यारी नागरि राधि कात
के स्याम जू ठाढ़े जू। और सखि ति
की ओट है गई ओं बकां गाढे जू। दे
खि सब चकि और ते दोरि आनि लप
टानी जू। अंग अंग बहु रंग सों रंगे
करत बात मन मानी जू। केसर सों लट
बोरि कें श्री मुख मांडो रोरी जू। तारी
डाथ बजाय कें बोलत होहो होरी जू॥
परस्पर सुख ऊपज्यो न यो त्रियनि को
भीयो जू। सादर बी रूव कोरख्यो जानु बि
धु प्रीत मपायो जू। नागरि अति अ
नुराग सों मुदित बदन तन हेरे जू। सर्व
सु वारे वारने अंबर हरि पर फेरें जू॥
मगन भई सब सुंदरी न वरस डायें भीनो
जू। उत आय जइत स्याम पें उकदि स
फगुआ लीनो जू। चतुर भुज प्रभु संग
खेल डौ इड़ विधि गोप कुमारी जू॥ सब

ब्रज छायो प्रेम सों सुखसागर गिरिधा
रीजू ॥ घोख नृपति सुत गाइये जाके
बसिये गांउ लाल बलि क्रम काहो । बहुरि
सुहागिनि गाइये जाको श्रीराधा नाउ ॥१॥
खेली सकल ब्रज सुंदरी नवसंत साजि सिंगा
रु । गावति खेलति तित ह्रांग इ घोष राय दर
बार । आयन नेन भरि देखियो सुंदर नंदकु
मार । नील पीत पट मंडिता औरू गज मो
तिनि हारु । संग सखा अति रस भरे पहि
रे बिबिध रंग चीर । गावत बजि त्र कोला
हला अरु ब्रज बासनि भीर ॥ ढुंढुभि ढि
मडिम झालरी रंज मुरज उफ ताल ना म
दन भेर राइ गिर जिरी क्रिवर बेनु रसा
ला । अति रस भरी ब्रज सुंदरी देति पर
स्पर गारि । अंचर पट मुख देखी जि रि
धर बदन निहारि ॥ पहिलो रूम कतां हि
फौजाको मोहन पूत । देखत परे चिरमो हु

नीयुवतीऊनमनधूत।इसरोऊमकता
हिकोजाकीश्रीराधानारि। पियप्यारी
रूपेंगयेमनमेंवोरवविचारि।इतब्रजऊ
सत्रिभुवननायकाबलओगिरिवर
धारि।उतयुवतिकदंबसिरोमनीरा
धाबरसुकुमारि।एकनिकरबूकालिये
एकगुलालअबीर।अमदागगनपरब
रषहीऊड़केदेतअहीर।।रतनरवचित
पिचकाईयांऊमकुमजलसोंघोरि।।पि
यमुरवसनमुरवछिरकहीतकिरनवल
किसोरी।स्यामसुजानतनराऊहीनवके
सरकेबिंदु।ज्योंऊलधरमेंदेरवियेमा
नोऊउदितनवकुरंदु।।युवतियूथमि
लिधाईयोपकरेबलमोहनजाय।न
वकेसरमुरवमांडियोछाडेओरवि
लजाय।इहबिधहोरीरवेलहीतो
लेबंधसंगलीय।।पूरनससिनिस

उडुउडीपून्योडोरीलाय। परिवास
कंनघोषऊनाजानुसुतावलेनाऊ
। आरगऊआंगलगायकेंविविध
वसनपरिधान। दुतियाबंदनबे
दियोसिंघासनयुवराऊ। छत्रचम
रगोविंदगडेआवेंचेनकुलसिरता
ऊ। डोरीखेलियेडोखेलियेसुंदर
लोल। बंवलनेंनविसालबूऊऊन
केप्रतिपालेलोलानंदगोपालाध्रः
गडिठोढीऊलोमतिकडेसंगलेऊ
सकलब्रऊबाल। १। विविधसुगं
धउबटनोसबआंगवेठिऊबटोऊ।
बंदनआंगलगायकेंफिरितातेनीर
न्हवाऊ। २। आंगअंगोछोपूछि
केंथलिमृगमदतिलकबनाऊ॥
ओंऊनेनोंआऊिकेंआफमिसविंदुका

न्हैलाऊ।१। अलकावलि अति
मोहनी मोतिनलरसरसगुथाऊ॥
मधि ललाटकनकटकायकें झोंदेख
ति अतिसुखपाऊ।२।पगीया वे
बेनायकें विरकिनिसीसबंधाऊ।
मोरचंद्रिकातनकसीझोंदिसदाऊ
नीधराऊ।३।कीनीकुंगलया अति
बनीसुतस्याम अंगपहराऊ। अति
सुगंधपकपनिबस्यो झोंबरफुलेल
चुपराऊ।४। सूथनगाढ अंगकीहों
लीयेचूरनबिरवाऊ।फेराकटितट
बांधिकें अरुसुरंगगुलालमराऊ।
५। अो भूषनवकमोतिकेपहरा
ऊतिंडुरगाऊ।फूलनिकीमालाग
रेझोंदेखतितनन अघाऊ।६॥
घरस्तेंसबगोपकेसरिकनकोव

गड़ि बुलाऊं। केसर के मटुका मेरो
पिय काइंहाथ दिवाऊं। सिंघ
द्वार गाड़ेर ड़ो तुम संग देऊं बसदा
ऊं। आगे ह्वे मेरे ला उ लै लालन
सब कों छिरकाऊं।१०। बड़े गोप
नि बोलि के रख वारे संग रखाऊं॥
मन माने त्यों खेलिये सब ब्रज रस नि
धुन छाँऊं।११। विविध भांति ब्रज रा
ऊ सों कहि बाजे अधिक बजाऊं। फगु
आ देबे कों आवे आभूषन बसन म
गाऊं।१२। सब ब्रजयुवतिनि कों आ
बे घर तें बेगि बुलाऊं। मेरे ललन कों
वा उसों फगुआ के गीत सुनाऊं।१३॥
रंग मगे बागे देखि के आपने दोऊ हगन
सिराऊं॥ मुगताफल ल्यारी मेरो होंले

आरती उतराऊं ॥१४॥ औ कौल करि
करि गोद लै घर भीतर डोंवे लिऊं
ऊं । बेऊ युवतीसिंग बैठि कें न खि
फूली आंगन माऊं ॥१५॥ माय मनो
रथ यों करेऊं कोऊ सुमति दे नां
ऊं । दीजै यह फल रसिक कों ज्यों
श्री बह्लभ गुन गांऊं ॥१६॥

32

रागकेतस्री। खेलतफागुसंगमिलिदोऊ आनंदनरिपियप्यारीहो॥ नवलकिसोररसिकनंदनंदननवबृषभानुदुलारीहो। नवरितुराऊलतादुमफूलेबरनरछबिन्यारीहो। गुंजतमधुपकोरविकैकेउतश्रवनसुनतसुखकारीहो। तैसेहीसुनगगौरसांवलतनबनीहैजोटएकसारीहो। कमलनयनपरभृकामेलतिहुंसिसकोचितसुकुमारीहो। नरिअरगनीकनकपिवकोईधारसिबब्रेजनारीहो। नरतिनावतमदनगोपालहिबाढ्योरंगअतिभारीहो। बकरोंमिलिदसपांवसखीगोबिंदनरेअंकवारीहो। चोवाचंदनअगरकुंमकुमाछियोसीसतेढारीहो। प्रेममगनमोहननतनचितवतिसबतनदसाबिसारीहो। चतुरभुजप्रभुसुरनरमुनिमोहेगुननिधानगिरिधारीहो।

खेलत बल मनमोहनो रितु बसंत संग
डोरी हो। सखा मंडली संग लिये बल
राम हलक जोरी हो। नेर मृदंग गाय हनो स
री बाजत करके ठ तोला हो। सब तन मद
न धुगट नयो नाचत ग्वाल निग्वाला हो।
ब्रज ऊन सब एकत नये घोषराय दर
बारा हो। इत बनीन बल कुमारि का
उत बने न बल कुमारा हो। युवति यू
थ वंशीवली अपने यूथ प्यारी राधा
हो। कुमकु वेत बगावे हीवा ढ्यो रंग
अंगाधा हो। बलमोहन एकत नयेसु
बलतोषपर आई हो। उत ढिको पिया
री राधिका बलराम कुछ परथाई हो॥
कमैं निमार मचाई यो नुरै हुं डुहो हि
स टोला हो। मधु मंगल पकरि कैठे रा
यो बांधि गुदी सो ढोला हो। बफुत
हे से बजमोहनो हे से सकल ब्रजबासी

ड़ो। छोरें हूं छूटे नहीं परी ऊगा हीफा
सोहो। इस तिर सब आई यो गावति
गारि सुहाई हो। सेना बेनी करि सब
बल मोहन पकरे जाई हो। ब्रजहू की
आखिन आंजई यो पिय की मुरली छी
नी हो। मन मान्यो फगुआ लियो पाछ
ड़ाय ब दीनो हो॥। इहि बिधि होरी
ले खेलें ही ब्रज बासिनि सब सुख पायो हो।
भगतनि मन आनंद ले यो गो बिंदय
ड़े जस गायो हो॥ खेलत मदन
गोपाल फागु सुहावनो। ब्रज जुवति नं
द लाल संग लजावनो। सुबल सुब
ऊ श्रीदाम सखा संग राजै ही। बजू
आवजर मधुर मुरली डफ बाजे ही॥
केरनि कन के पिचकाई फेंटे अबीर की।
बरुआ बरिसो गरी का बेरि केसर नीर की।
सजि के साज समाज चले बृषभानु कें॥ मु

निमनसागरछ्लिसुनतधुनिकान
कैं।उततेंहरिकृनिआईभजबासि
नी।तिनमेंकुआरिकिसोरिनित्यवि
लासिनी।संगरंगीलीसाजलियेनव
नागरी।बरनेरलियेंराजतफूलनकी
छरी।हरिआयेडुकटोलपोरिभउ
रायकें।इतहोवेतउतगारिदेतब
ऊभायकें।जैकबक्कनबक्कदरसी
रबिबेकक्कं।तेगुरुजनकीलाजग
नेंतननेंझकं।खेलनकोंहरिसोंऊ
लसीसबेआवही।भरिकेमकेमक
नककेघोलेओटइरावही।छिरकत
भरीपरस्परमोहनभामिनी।उतेउ
लोलेबीरकियोदिनजामिनी।उत
तेगु...
२७ नी।संगसखानहिसुन्दरतेकोनकहे

गये। सबसखियनिमिलिस्यामग्वा
नकेगहिलिये। घेरिआरसबनामको
रदसबीसते। दियोआरगजोढोरिमनो
ढुरसीसते। लेललितादईगांठिनील
पटपीतसों। घनदामिनिजिघोंराजत
मोहनमीतसों। फगुआमांगतरंगर
धोनेकधोपरे। यहसुखदेखतकौन
कैधीरजकोधरे। खेलेफागुनरनारि
भरेअनुरागसों। अरुबासिनमेंस्या
मसंगबडभागसों॥ रितुबसंत
केआगमेंप्रबुरमदनकोजोर। केलिर
सकेमकेरिरेकेमकरो। राधागोरीसुंद
रीहोसुंदरनंदकिसोर। कुंउनमिलिगा
वतिवेलीडोकेमवृनंदकेद्वार। नेत्यं
करेअरुसुंदरीहोमोहिलियामनमा
र। बिपिनगलीसुंदरबनीहोललि
तेलवंगनिबेलि। अबमनोहरमोरियो

हो करनि केतकी बेलि। गोकुल गाउं सु
हावनो हो वृंदाबन को चोर। रचे खिड़ि
ग्वाला ग्वालिनी हो रसिक को कुसमो
र। एक गोरी एक सांवरी हो एक चंद बद
नि सोहे भाल। एकनि कें उरे जगमगे
हो एकनि तिलक सु भाल। एकनि चो
ली अधर खोली हो एक रही बंधछूटि
। एक एकावलि उर सोरे हो एक गई ल
रि टूटि। एकनि चीर उरुखसि परे हो ए
कनि चर कत लूम। एक अधर रस घूंट
ही हो एक रही कंठ झूमि। ताल पखा
हो वज रसर घो बीना बेनु रसाल। मुकरी
वंग जुबाउ हो हो बजावत गिरिधर ला
ल। चोवा चंदन कुमकुमा हो उतग सु
लाल अबीर। सुर नर मुनि जन मोहे
यो व्योम बिमान निमीर। सुरत समा
१ हो

गमरसरछोडो मानकमडा गजमत।
परमानंदमनमोहनाडोर सिकराधि
काकेत। रसिकफागुखेलेन
वलनागरीसोसरसबरऋतुराजकी
ऋतुआई। पवनमंदअरबिंदफू
जे दबिकसे बिसदचंदपियनंदसुत
सुखदाई। मधुपटोलमदलोलसंग
संगडोले। पिकनिबोलेनिरमोलकु
तिवाकगाई। रसरासमसों बिलासय
मुनापुलिनमेंसघनकुंज बिपिनरही
फूलिछाई। कनकअंगबरनीकरि
नीबिराजे गिरिधर नउवराजगजरा
जराई। युवतिअंसगामीमिलिछीत
स्वामीजनितबेनुपदरेनुबडभाग
पाई॥ छबीलेहोरंगीलेनेनां
रसभरेनाचतमुदितअनेरे। खेजे

राटमांनोमत्रमधुपदोऊकेसेंऊकि
रतनफेरे।स्यामसेतरातेरगरंगितमा
नौचित्रचितेरे।ऊपेनदासप्रभुगो
वरधनधरस्यांमसुभगतनडेरे॥

रागहोडी

।याको कुलके चोंडे रंगराती ग्वा
लि। मोहन खेले फागु नैंन सलोंने नीरं
गराती ग्वालि। नरनारी आनंद ने
यो रंग राती ग्वालि। सांवल के अंगु
राग नैंन सलोंने नीरंग राती ग्वालि॥
उमग्यो मानिस घोष को। नुवन राधे
नहि कोय। सुरमुनि कुंड निबाअड़ी। मु
वन कुलोइ लडोय॥ कांकमालरी कि
नेरी। तालमृदंग उपंग। डफ आवा
सुरिबोअड़ी। आवऊ के सुरवंग॥
रतन खचित पिचकाईयो। कर लिये
गोकुलराय॥ केसूकुसुम निवोरडी
भरत परस्पर धाय। अबीर गुला
ल उगवड़ी। बूका बंदन धूरि। चढि
बिमान सुरदेखिवड़ी। देउदसा गई
भूलि॥ खेलमचो अति गडुगधो।

सुनतब्रजबधूधाय॥ राधारसिकसि
रोमनि॥ ऋासकरनबलिजाय॥ १

रागधनासरी। घर २ तेसुंदरिबसीदेख
नबृजराजकुमार॥ निरखिबदनेबि
थकितभईहुरिठाढेइसिंघदुवार॥१॥
मनमोहनलालनामनहर्योहो॥
हर्योमनसकलघोषकुलराज॥ध्रु॥
बीनांबेनुझांझउफबाजेमृदंगउपंग
तोलगावतबेतथ्रयचलतिश्रीदामाबाछो
डेरंगरसबोले।२। इतराधिकाअनुति
वेंडावखिलखिलितीगोपीआपार। उत
मोहनहलधरदौऊमैआरवेलमच्योद
रबार।३। रतनखचितपिचकारीकरले
छिरकतगोपकुमार। मदनमोहनपिय
रसमेमातेकछुबेनअंगसंभार। धासि
घलितकटितटबसनमेरवलाउरगज
मोतिनिहार। बिथुरीअलकबदनपर
राजैगिरतकुसुमसिरभार।४मोहन
प्यारीसेनादैहलधरपकरायेजाय॥औपु

नउसतपीतिपटमुखदेखायेहुं-आंखिअं
नीय। बड़ुयौंसमिटिपकलेबहुमुट्टरि
मोहनतपकरेधाय। औधरपानरसपिबती
पिबावतिमुरलीलईछिनाय।।७।।परिवा
सिमटिसकलब्रजबालखेलेउमुनन्दलना
को। वारिकुंवरऊपरनंददेलानीदेतिबिब
निबहुदान।८।। द्वितियापाटलिथायस
नेबैठेचमरछत्रसिरसाजि। राजितसरवा
सहितश्रीदामाबलिउडुवराज।।९।।स्या
मसुनगतनश्रीतिराजतहेओरगऊपीत
सुवास। गोबिंदप्रभुपरसकलदेवता
बरखतकुसुमअकास।। छाड़िदेहु
यहबीनिप्पारेकमलनैननमनमोहनी। धं
गिरिधरघटियांउठिजोरडीमारगरोके
८ तेआय। बछुरेऔयौनकसीसतेंमटुकी
देतेढुलाय।।१।। आवतजातसदारदी

कबहूं नदे खी री ति। अनहोंती अबे नं सु
नेकेसें होय प्रतीति।२। एसी तुम ड़िनबू
झियेऊ ट किरहु तेगहिबांहि। मातपिता
भैया सुनेंसाऊपरे बनमांहि।३। हसत हि
में मनमुसत होकहि मीठेबोल। सेंत
मेंत अपोपाई येयहु मोरस निरमोल।४।
चेतुर मुऊ प्रभु चित कर खियो चित वनि
नेंन बिसाल। रति झोरी मिसदा नकें गोव
र्द्धन धर लाल।।

41

कमानप्र८

मोहनषेलनहीरीखसनागो
पखीपोथीमोहनषलनहीरी

राग-आसावरी। धन्य२ नंदजसोमतीहो
धन्यश्रीगोकुलगांउ।। धन्यकुआरदोऊ
लाउिलेबलमोहनजाकोनांउ। छबीलेहो
ललना। श्रीगिरिवरधारीलोलकु
मया गोकुलकेचंद छबीलेहोललना।। ध०
सखानांउलेबोलियोहोसुबलतोकश्रीदा
म।। घर२ तेंसबधसिवलेहोबोलतेसुंदर
स्याम।२।। नेषबिबिचित्रबनाईयोन्हबनबेस
नसिंगार। निजमंदिरतेंसजिवलेहोबाले
केबलबनवारि। श्रीगिरिवरधरआतिर
समरेहोमुरलीमधुरबजाय। श्रवनसुनत
सबब्रजबधूहोजहांतहांतेंउठिधाय।।
पिंकारिकरकनेककीहोअरगजाकुमकु
मघोरि। आनप्यारेकोंछिरकईहोनंदकिर
नवलकिसोर। रंगमुरंगउफजोलेरीहो
बाजेबजूबिधसाजि। केचरमेरीसुहांवनी

होरी घोषसवगानि। एक ओर युवती
नई हो एक ओर बलबीर। कमल निमार
मवाई योडो हवेसु भटरनधीर। उलटि त्री
यगाढी नरही अपनेर टोल। रूब के वेत ब
गावही हो विरखभीडे बोल। ललिता बि
सारवा मतो मत्यो डोल नैंसु बलवृन्दा
याडाडाके कन्चातिवेंने रूमोहन कोंप
कराय। दुसतिर सब आई योडो मोहन
लीने घेरि। काउरनें ना आ अकें डाडस
तिबदन तलडेरि।१०।इहविधिहोरी
खेलंही हो सकल घोषसंग आय। जुग
लकमलके रूपपर ऊन गोविंद बलिर
जाय। होहो बोलत हे लत मोहन खे
लत होरी। सुरधुनि सुनि ब्रजसुंदरि घरर
तें सब दोरी। नागरि गुन आगरि रससा
गरि बेस किसोरी। तामें सरस सुहागिल

राजितराधागोरी। उतबलमोहनगोहे
नगोपकेओरलरवकोरी। नवबयसमा
मतूलरूपनेषनूपनसतनोरी। तालम
देगउपंग बंग बंसीडफओरी। आनके
डुडुमिमदनभेरना दिनधुनियोरी। वंदे
नवंदनबूकामेरि रलीनफोरी। मृग
मदमलयकपूरकुंजलीसतकेसरियोरी।
अरगजसोंधेवीचित्तगंधकरीबजरवोरी
नरतिनचावतेनाचदि मुरवलपटावति
योरी। नाजगईतजिनाजिजगावतिगी
तनयोरी। उवकपोलकबेपरसतरज
आरजकीचोरी। नांमावंदनगाबले
कोंपकरेनरिकोरी। वकरेपंजसोंआय
करीजकनोराजोरी। बांसुलियेंकोपि
डोथबदेरंगनाजनफोरी। मारपरेमुरि
आयटिकेबजरानकीपोरी। बलकेहु

बाला बिगोवति कोऊ बरज्यो नरदेरी ।। सां
गसबेन च बायन पावे मानगयोरी। गो
पिन गोपहुत यगहे गिरिधर बलदोरी ।।
। गहे गिरिधर श्री राधा नुऊ बल बांह म
रोरी। छीनी मुरली माला कटिपट पी
तपिछोरी। नैनं ऑजि मुख मां जि स्यां
म सिर जूथी मोरी। मोहन को पहिरा वति
आपनै भूषन छोरी। बागो आप बनी
य पाग बांधी तऊ डोरी। डोहो डोयर दी
य ऊ डाव ति पीत पिछोरी। लपटे तन त
न सुख रंग सब आंगदी सत नोरी। रह्यो
रस खेलत फागु उलबऊ केलि करोरी।
संत त माधो के मनै गोपाल रहोरी।।

१ मदन

रागसारंग। माधोबावरिखेलेहोखेलेरीजमुनाकेतीर। रामबिलासीबावरिखेलेंगोकुलनायकरीजमुनाकेतीर।ध्रु०। ऊपरऊपरबरनीगोपिकाकेसोरीघनस्यामसरीर। नीलपीतपटमंडितानांचतरीवेप्रेमगंभीर।१। बीचबीचगोपीबनीबिचबीचबनेहेमुरारि। मरकतमनिकंचनमनिमालाहोमानोगुहीहेसंवारि। किंकिनीनूपुरबाजैहोसबदोरीकोलाइलकेलि। कुनितबेनुब्रजनायकोनटकतगोलमुझगलमेलि।२। करतलतालबजावहीगावहोरीवेगीतरसाल। मदनमहोदयसुनिरह्योलीलासागरगिरिधरलाल। एकतपानखवावहीएकजुमांगेदेहुउगार। एकतमुखचुंबनकरेएकेनिछूलेटूटेहार। चंदछूलिकोतेकरह्यो

हरिनांरीमोहीमुरलीकेनाद। थाक्यो
रथकेसेंवलेब्रजयुवतिनिहोलायो
बाद। चढिबिमानसबदेवताबरखव
री नैंवेलागेफूल। ऊऊऊयहुनंदनारा
सरच्योरतिनायकहूल। सोप्रसाद
हमकोंदियोहरिपरिरंभनबाहुपसा
रि। परमानंदप्रभुश्रीपतिपुन्यपुंज
ऊतेगोकुलनारि॥ स्यामरंगी
लीचूनरीरंगरंगीहेरंगेलेबिहारीहो
।अतिसुरंगपचरंगबनीतनपहिरि
श्रीराधाप्यारीहो।कंचनतनकंचुकि
खुलीस्यामसुदेससुढारहोमांउनिवि
यपटपीतकीत्ररंगऊमोतिनिझारहो।
सीसफूलसिरसोहेहीमोतिनमांगसं
वारीहो।बिबिधकुसुमबेनीगुही
८१ चंपकेवकुलनिवारीहो। श्रवनकुंड

मलेति फुल मूली अहं सट कारे के माहो। खुटिलो खुली जराय की मृगमद आड सुदेस माहो। नकबेसरि अतिसो है ही हरि करतर बिराजती हो। कंठ सरी अरु मोती सरी बिच ऊंगाली पोती हो। चोकी रे मरु जराय की रतन खचित निरमोल हो॥ नोग्रही कर पोंहुची योरवन निबरा अति मोल हे। कटि किंकिनि रुन झुन करे पग नूपुर झनकार हो। वलत ई भांति मोहीयो सोभा कहत अपार हो। इहि बिधि बनि ब्रजसुंदरि चली रसिक पिय पास हो। ब्रजवृंदाबन भूषना पिय प्यारी को जोरी हो। जो बिंद बलिर बलि जाइ नि लकिसोर किसोरी हो॥ तें मोहन को मन हर्‍यो तो बिनु रह्यो न जाय री प्यारी॥ कुं ऊमहल बैठे पियान वपत्ते वे तलप सबारीहो।

बिचऊड़ी बिचमेवती बिचरनवलनिवारो
प रीप्यारी। ध्रु०। तबहूँ बैठे निहारही कुंऊ
ऊटीके द्वाररी। रोमइर खतन पुलकेही
सुंदर ब्रऊराऊकुमाररी। आपनेकारन
खगूथे ही बिबिधकुसुमकी बोलीरी।
तिहारे ऊरथ दिरा यहै वलिहि बेगि ऊठि
बोलीरी। कबकुकर्नेनतिमालिके करत
तवबदन ध्यानरी। तनपुलकितऊभे
टहीकरतत्त्वकीधरपातरी। बंददेखत्री
नंदहीतवमुखकी अनुहाररी। इहिछबि
वाहितपूऊडीनिरखिकलेके बिचाररी।
ऊदपिसकरबृऊसुंदरीकछुबैनमन आ
ह्रायरी। चातकऊलधरबूंदज्योंमु
विऊलन्नि बानऊायरी। पियकोप्रेमसु
८ खमुखसुन्योतबहीचलीऊठिधायरी।
८ ।गोबिंदप्रभुपियसोमिलीरहसिकेऊलपटा
यरी॥

रागनट। जुवतियूथसंगफागुखेल
तनंदलालजुअरहोरीहोहोरीहोहोरी
बोलनां भावतनटनरायनरागमुदि
तदेतबेनफागुनजुदिसउरिगोपबा
लहदटोलनां। बाजतआवऊउपंग
बांसुरीसुरबीनेबनसरवबेसफांऊ
फमदंगढोलनां। बसंतसुरअनेकता
लसुघरराय श्रीगोपालबेनुमध्यगा
नकरतहोरीहोहोरीबोलनां। पहिरें
तनभांतिरमोको कहुकहीनभांति
भूषनआभरनबिबिधपटअमोल
नां। छेमछमासुरंगछिरकतपिचका
रिनरिस्परस्परदेतकीकेबकउकीखो
रिखोरिडोलनां। काहूकेचिबुकचारु
परसिकाहूकीबेलरिकाहूकीखुभी
काहूकेकरतकंचुकीकेबंदखोलनां।

काहूके लेत हार तोरि काहूकी गाद
तनु उमरोरि काहूकों पकरि छांडि
देत करि इंडोरनो। गोकुलविधुकी
चमच्यो सौरभ चहुंओर बढ्योव
बतन अनुराग उमगि रस अतोल
नो। अनंददास प्रभु गिरिधर प्रेम
सिंधु प्रगटयो सुर बिमान बिथ
कि देखि ब्रजकेलोलनो ॥१॥

50

राग गोऊी॥ सर सवसंतसुखवखेलिये
आयो फागुनमास। होरीऊऊरोपी
ओसवब्रऊऊनमनउल्लास।१॥गो
ऊलकेराजा।धु॰।रजनीमुखब्रऊ
आईयेगोधनखरिकनिवारि।स
खासंगसव बोलियेयोघरदेत
बगारि।सबऊोपवृषभानुकेंसब
मिलआयेपोरि।श्रवनसुनतप्यारी
रा धिकावदीचित्रसारीदोरि।३॥नु
रुकि रुरोखा रु रिवयाइकुनमनआ
नंदा।एसीछविनबपाईयोमानोनिके
स्योघराते चंद। वासरखेलमचाई
योऊबनिथरेंआईफागु।रुमकेवे
तवगावदुमनमोहनगोरीराग।नर
नारीएकनयेघोबरावदरबार।ऊसतर
सवदोरीयेकरिभूषनवसनसिंगार॥

अगनितबाजै बाजै हीरंऊ मुरउ नीसान।
उफ डुंडुभि अरु झालरी कछु बैन सुनियै को।
न। पिय काहे कुं कनक की आरगजौ ऊ
मजेम घोरि। प्रान पिया कों छिरकंदी
त किर नवल किसोर।। बैठु रिस रखी
स ब दोरी यो बल मोहन सौ नै संग। यु
वती गन पर बरखैं ऊ नवल गुलाले
सुरंग। ललिता बिसाखा मतो मत्यो
लीनै सुबल बुलाय। चेरी तेरे बाप की
नै कै मोहन को पकराय। तब हि सुबल
को तक रह्यो सुनक्कु स खाए क बात।
इत नहि बनी तरऊ आनदै बोलत ऊ सोदामा
त। डेरें रस बरंग के निकसाने री जाय।
सेन सब देदोरी यो मोहन पकरे धाय।
५३ प्यारी को अंबला लियो अरु पीय को
पटपीत। सकत नि गांठि बजोरी योन

ले बने दोऊ मात । कगु श्री को मुरली
लेई ओर कंठ तें हार । श्रीराधा को पहि
राईयो हसति दे दे कर ताल । मे वा मोल
मगाईयो कगु श्री लियो निवेरि । मन
भायो करि छाडीयो हसति बदन तन हेरि ।
१ इ बिधि होरी खेलिही ब्रज बाला सं
ग से गाय । युगल कमल के रूप पर गो
विंद बलि रज जाय ॥ परिवा प्रथम कु
अर को देखन चली ब्रज नारि । अंगर छ
बि निरखत लियो इ लाल नु मनु हारि । कुंऊ ल
दाम कुसुम नि की पहिरें ओप नार्यो ती ऊ
र निततन तर लित उर गऊ मो तिन हार ।
ऊंच पर कंचुकर सर कत पिय संग करति
बिहार । चोवा चतुर चित बंदन बर चित
सांवल ओं । विविध भांति रचिपडे रं

छवि निरखि [illegible] मन हरलिये

नानाबसनसुरंग। पांचें प्रमदामुदि
तगावेंसबमिलिगीत। छावभावकरि
रिझवतिरसिकश्रीदामाभीत। छठि
कौछैलछवीलोछिरकतछोटेंश्रीनृ
प। सोभाबरनीनजायीजेमोकूंत
केनूप। सातेंसकलसखासंगघर
रदेतबमारि। सुनतकूंऔरकोलो
हलोनिकसीगोपकुमारि। आठेंने
(पिय तिआतुरऔवलनिंसीनेंघेरि। मु
रलीपीतपटकटकिरदुबदनतन
हेरि। नवमीनवलनागरिनवकुं
मकुमकुलघोरि। पियपियकों
ईनिछिरकतितकितकिनवलकि
सोरि॥ दसमीदसोंदिसदेखियत
८८ अतिप्रफुलितबनराऊ॥ मदनब

संतमिलखेलतेअलिपिकसेनासाजि।
एकादसीलकेओरश्रीराधासंगसबना
रि। उतकीओरबलमोहनबालकेयूथ
मुरारि। द्वादसीदहोदिसमांच्योखे
लेरायदरबार। त्रेरदमामाधोसाको
उकान्हनसंभार। तेरसतहनीगनप
रउडतसुरंगअबीर। एहतेतेवेउत
तेंगईपिरस्वरभीर। चौदसखुदिसतें
बररखतपरिमलमोद। ग्वालनकोकृ
ब्रजउनब्रजमेंमनधिप्रमोद। पून्यो
पूरनचंदमाआनंदसबलोग। धो
बरायबुजछायाकरतसबसुख
भोग। इहुबिधहोरीखेलतबरखत
सकलआनंद। गोबिंदबलिरबलि
हरीजेमेगोकुलकेचंद॥

ढोटा दोऊ राय के खेलत ओलत का गुड़ो।
ओ देखे सो मोड़ ही व्रति छि नु न वे अनु
रागड़ो। सखा सँग सब को लिके घर २
देत बगारि ड़ो। सुनत ऊ आर को जा
हू तो निकसी घो ब क मारि ड़ो॥ तुब
न बसन निसा कि योत रग ऊ मोति नड़
रा ड़ो। कुबक चेत बगावड़ी घोब राय
दर बारा ड़ो॥ बाजे ब क्रुत ब ऊ वड़ी
उ पकडु इ कि के ठ ता सा ड़ो। बल मोडू ने
म धिनाय का व कु दिस नांचत वालो ड़ो।
पिं कांई कर कैन क की आराजा कुमकु
म घोरी ड़ो। बलराम ऊ छ कों छिर कड़ो
उसत सब मुख मोरी ड़ो। कोलाहल सु
नि आई घो ब छेव ऊ सके राऊ ड़ो॥
सिंघद्वार पर बैठी यो ब उ उ गोपसमाऊ

हो। बृजआनीत हां आईयो जहां बा
डे गोप उपनंद हो। सो थे ठाढीनी पयो
आंजति आंखि मुकुंद हो। इह बिधि
डोरीखेलिहो अर गउपे कमुग धाहो।
बिधसो होरी लगाई यो पूत्यो पूरनचं
द हो। वरि वावसननिसा ठियोना
हि धोय आनंदा हो। गोबिंद बलिबं
दन करे जे जे गोकुलके चंदा हो॥
सब बृज कुलके राय लाल मनमोहना॥
नवल कुंअर खेलन खले मनमोहना। मुदि
तसखा संग लाय लाल मनमोहना। सक
ले अंगन्हूपन सजे मन मोहना॥ बिबिध
बसन परिधान। निकसि द्वार ठाढे भये।
मुरलीमधुर बजाय॥ श्रवनसुनित सब ब्र
ज बधू। जहां तहां ते उठिधाय। बिबिध जा
ति बाजे बजे। ताल मृदंग उपंग। झांझ मुरज

उपकंडमी। करकंठतालमृदंग। जुवति यू
थ मिलि धाईयो। नरिपिवकाईहाथ॥
वकु दिसतें बछिरकही। नरतिकु और
नेय गोपीनाथ। वऊरि सखा सन्मुरवों आगे
देवलबीर॥ युवतीगनपर बरखिही।
ऊइकेदेत अडीर। बऊरि सिमिटसब
सुंदरी। मोहन लीने घेरि। एकल मुरली
लेनऊी। एककहे देफेरि। एकपीतपटगड
रही। फगुआदेऊ अमार। एसेहु मनपती
ऊही। गहने देऊ मोतीहार॥ ललिता लखि
न तबवें कहे। सुनुगोकुलकेराय॥ तोडुम तु
मेकोंजानदे। श्रीराधाकोंसिरनायप्या
रीकरकाऊरलियो। ओडेपियकेनेंन। औ
वरपटमुखदेडसी। मिलवति करदेसेंन।
न अरुऊँ आरस औतिरसमसे। ओडेनखरे
बिराऊ। जुगलकमलेअतिमुकलिनी।

६

मानो बेहु अगले अचिराऊ। अतिरसमती
ब्रजसुंदरी। पियसंगकरत बिहार॥ खसित
कलेयक टिकिकिनी। कछुवेन अंगसंभार॥
ऊंचपरकचलरलटकही॥ लागतपरमसुदे
स॥ मांनोंमुंअगनिचकुदिसा। औरकोमृ
तपीवनराकेस॥ इहुविधियबमिलिरवेल
ही। गावतिगोरीराग। नवलकुंअरपर
अतिबढ्यो। प्रतिछिनुनव अनुराग॥ जु
वति यूथमिलिउलटियो। अपनेरटोल।
पियमुखदेखत फूलही। प्रमुदितलोचनलोल।
इहुबिधिहोरी खेलही। ब्रजजनसंगलगाय।
धोषनृपतिसुतबदनकी। गोबिंद बलिर
गाय। लालमनमोहनां। खेलतमदन
मोहनपियहोरी॥ लरिकाएकसहइससं
गलीनेकरत कुलाहलब्रजकीखोरी॥
ध्रुः। भुवनभुवनसे निकसी धारके औ
तितनप्रफुलितनवलकिसोरी। सो धो

लयें कनक के बेलो भरि अगर कुम कुमा मांथ
सिघोरी। एक अबीर गुलाल लियें कर एक
निलई विकृत करि रोरी। एक पलास कुसुम
रंग बरखत एक लियें बीरा भरि झोरी। बाऊ
३५ त ताल मृदंग मुरज डफ किंनर मोहन मुरलि
धुनि थोरी। मधुर वचन हसि कहत पर
स्पर गोविंद प्रभु लीनो चित चोरी।।

उ सिसंगु खेलति सब फागु। इहु मिस प्रगटके
र ति गोपी उर अंतर को अनुराग। पहिरें सुरंग
बिबिधि चोली कसि काजर दे दो उनेंन। बनिर
नि के सिर ऊढी नई सुनि माधो के बेंनु। उफ त्री
रू झांझ बांसुरी मऊ और बाजत ताल मृदंग॥
अति आनंद मनोहर बानी गावत उठत तरं
ग।।१॥ एक और गोबिंद बाल सब एक ओर
ब्रज नारि। छाडि मऊ चिस बदेत परस्पर अ
पनी भांवती गारि। मिलि दस पांच सखी
बेल कऊ ढिग ढिला वति उच काइ। नेरि अ
र गऊ अबीर कनक घट दे तिसी सतें नाय।
छिरके तिसार वऊ बादि कमऊ मा चूर कति
बंदन धूरि। सो चित ढे माना सांक समें घन
आये ढऊ लपूरि। दसों दिसा नई परिपूरन
सूर सुगंध प्रमोद। सुर बिमान को तऊ ल
भूले देखत ऊऊ बिनोद। खेलत फागु
कऊ ले हो हो री। इत कांमि नी समाऊ बिराजि

तउत मोहन हे धरकी ओरी। ध्रु॰। बा
ऊत ताल मृदंग झांझ डफ बिच बर मोहन
मुरलि धुनि घोरी। मुवन सुहाई गारि दे
तहं ऊ वे तान से से त्रियगोरी। कोटि मद
न सम सुंदर देखत तेऊ मोही ऊडी मति
जोरी। मोहन नंद नंदन रस बिध्य की क्यों
ऊ देहि जातन हि मोरी। ऊमकु मुरंग नर
न नरि पिच कांई डरि तौं छिर कति नव लकिसो
री। ऊनु अनुराग ऊमगि सन्मुख के था
वते बेस मंड बर तोरी। कब ऊक दस बीस
के मिलि धावति ले ति छिडाय मुरलि ऊ को
री। आय श्रीदामा ले आवत हे दे न मा
न बकु मोति पटोरी। कनक कलस कुम कुम
भरि लीने अरु कमूरी बकु तकरि घोरी।। खे
लत गोकुल बीथ की वम चि अधिके सुगंध
२६ नई ब्रजऊ खोरी। भरि कर कमल अबीर ऊ आ

समय वसंत गोडी 58

८ वतिगो बिंदनिकसिआयचोरावोरी। मानक
अचंउबातहुतपंकअधूरिगनसोनितचक
ओरी। ग्वालबालसबसंगमुदितमनआ
ययमुनाउलनहातहिलोरी। नयेबसन
आभूषनपहिरत ओरनिदेतपटबरको
री। देउआनंदसमेतकरतहिअतिलक
फूलफलरोचनरोरी। सूरस्यांमविप्रनि
नोटनिकोदेतकनकरउतनकीबोरी॥
ब्रजकीबीथिनिडोलत। मदगोपालसन
खासंगलीनेहोडोहोरीबोलत। बाजतता
लमृदंगझांझडफनाचतगावतगीत। पहि
रेंबसनअनेकबरनतेनीलअरुनसेतपी
त। सुनिसबनारिनिकेसिंगारीनेइआप
नेरकार। नवसतसजेंअकुछितआनन
मानोसरउमुदनिकार। चपलनेंनअति
चतुरचोरतनजानुअउलाईनिजाय॥

देखतहीनंदनंदनपरमकृविमिलतमधुप
ज्योंधाय।।गहिराखतिजुउनरिचकृ
दिसउरिअतिरतिहमत्रेकृलात।।
मानकृकमलकोसआभ्यंतरजवरमव
तेविनुघात।छाउतिजदिजांवतोअ
पनोकरिराजितअंगविभाग।मानकृ
उडिवबलेडेअलिगनआवतरंगपरा
ग।अंतरकछुनरघोतिढिओसर
अतिआनंदप्रमाद।मानकृप्रेमसमु
द्रसूरसुखउमगितकीमर्जादि।।
होरीवडोहोहोहोरी॥खेलतअतिरस
रीतिप्रगटनेईइतकुंरिउतराधिकागोर
धन।बाजततालमृदंगझांझफबिवर
मोहनमुरलिधुनिथोरी।गावतिदेदेगा
२०० रिपरस्परजङिकाकेबेषमानुकिसोरी।
मृगमदकसारवउबीदिकमकेमावेसर

 59

मलेयमिलेमथि घोरी। भर तरंग [illegible] राजत
सुरवसागरमानऊँउमगिबेलीवलिफोरी॥
छुटिगईलोकलाजऊकुलसऊनीगनतेगु ने
रुगोविनिकतकोरी। मानुऊमरजादाउ
लंघिउधिकसुरवचोरस्नोरनिरवतनि
सघोरी। इतपटपीतकोयेंइंरातेउत्त
कंचुकीपातरंगबोरी। मदनदुंदुकलिऊंद
विराजितेसकुंवरिसकेतिगोडिगदिऊोरी।
बरनिनजायबवनरचनाकविइहिछवि
ककिऊराकिऊोरी। सूरदाससारदा
सरलमतिसोइननटनिदेखिलईभोरी॥
कछुदिनग्रउ ओरेरडोइरिहोरीहै।
अबऊनिमथुराऊोक्रअडोइरिहोरीहै॥ध्रु.
परबकरऊघरआपने। इरिहोरीहै। ऊसल
केलिनिबाऊि। अडोइरिहोरीहै। परिवा
पियवलीयेनहो। सबसुरवकोफलफागु॥
घरकेटकरऊऋबआपनो। डर अतेर को

अनुराग। मनऊहेऊ दिनसो धिकें उरि। यु
वतिनिकें उर आनि॥ चिकुर चवर अंबर ध
रो। घूंघट आतपतानि। पंइइति छिमे
रि बरनिबो। सार दछपासमाऊ। फागुन
मदन महीपति। इहबिध करिहै राजु॥
तीऊति होंपुरषा लिहे। आपनी आनि
नरेस। सुनिमगमग ऊफऊमऊमी। सोई
करिहैसबदेस। चोषिव कुदिसचालिहे
। इह अपनीएकरीति। मेरेगुनकहौनिसऊ
फे। छाडिस ऊवऊजनीति। पांचेपरमि
तपरहरो। चलकुसकसएकचाल॥ नारि
पुरुषएकेकरो। बसनपीतप्रतिपाल।
छोहि छुरागसरागिनी। तालतानबंधान
षटुसबरितरतिनाथके। नीरवकुइह
अंबधान। सातेंसुनिसबनऊिनये।
रछाकीकपिजानि॥ करतक्रियातेसी

१२

नबे।आयसुमायेंमानि।ओढेउरउनेमा
निकेंसबनिमतोमतुएक।नृपलोकदेसोकी
ऊये।क्योंराखियेबिबेक।नोमीनवसत
साऊके।उरसुगंधउपहार।मनऊंघलेम
नमेलिके।मनसिऊनुवनऊहार।दसेंद
सोदिसोधिकें।बोलेरानाराय।ऊगली
त्योंबलेआपुने।ज्ञानबेरागछिराय।मुनि
आईसुएकादसी।बऊरेंआसिसदेत।रा
ऊकरोअतिसुखसदा।रतिअनुरूपमत।
देखिनेलेनटआपने।द्वादसीदिवसआवे
ते।अद्भुतआयुधआपुने।सबेसुनटप
ऊलेति।ढोलभेरिउपबांसुरी।बाऊे
पटहिनिसान।मिलऊलोकपतिछाडिकें
।नहिउबरोबिनुदान।रविकवपायक
सऊे।खबरनुमेयेअसवार।धूरिधातुरंग
घटभरे।धरेऊनेहथीयार।ऊहांतेहोसेना

वली। मुक्ते फ छूटे सिर केस। आपाय नु सू
केनेडी। रा झारा कुआवेस। जे कव क देखा
नहीं। कव कुलु नीन हि कान। तिन कुल ना
रिन केउ रनि। लागे पुरुष पुरान। मात
पिता पति बंधु की। छाडी सब कुल कानि।
धाय धर हि बल कुल बधू। पर पुरुष हि
करे पहिचानि। जस्म भरे अंजुनाँ। छिर कहि
बंदनवारि। मरजादा राखे नहीं। कटिपट
ले हि उतारि। जहां सुनि हित पसंजमी। ध
मधीर आवार। छोट हि जायनि संकेह
। पकर हि तोरि किवार। तेरस चोदस धीस
में। मानु झीत्यो जग मारि। स ठवं डि तवे
स्वविधू। स बे नये एक सार। सब गावे
नांवे सबे। सबे उडाव हि छारि॥ सा
धु औ साधु न पेर वही। बोल हि बचन बि
कार॥ पून्यो अगट प्रता पतां हु रे मिलेषा

लागि। ऊहां तहां डोरी लगी मन कुमवास
नि आगि। आति आनी ति मति आनिकों
परिवा अकटी आनि। विमल बसंत कु
सालिकें। मरजादा कीकांनि। तब सब बड़ी
बिनती। हसि औरेऊ हाथ। बरन ध
रमतें राखियै। कृपा करकुरतिनाथ॥ सु
नि आई सुरति सुनाथकों। रूपसमझो
मन मांह॥ आयधरम अपने चलो। ब
सोदमारी बांह। मरकहांलों बरनियै।
मन सिउके गुनग्राम। सुन कुस्याम इहि
मासमें। कीयो कुकोरन कांम। कोऊकृ
पा करि ब्रजे रहे। बरजे म घुरा जोत। सूर
रसिक मनि राधिका। कहि कहि सो सो
बात। आदो हरि होरी है

१०३

कमलनयन मनमोहना मेरो मारग छाडि
देहु हो। ध्रु०। कटि पट पीत सुहावनो उर उपरें
नों लाल। सीस मोर के चंद्रिका चंचल नैन
बिसाल। सोहत निसेद मेलो बन्यो मृगमद ति
लक सुभाल। अलक मधुप सम राजही
उर मुक्तावलि माल। कुंचित केस बदन छ
बी सुंदर चारु कपोल। कुंतिमंडल कंचन
मनि झलकत कुंडल लोल। कुंज भुवन तें
हों चली अपनें गृह कों जाति। तुमहि
बिचारो जिय कछू हैक कौ रीति॥
तुमहि बिचारो जिय कछू उर अंबर
कत कै गहत हो दूरि न येकहौ बात। बन
क्रिबसो रनलाई ये सुंदर सांवल गात। सां
झ परी दिन आथयो अरु गाई कि दिका
म। खेत मेंतें कोपाई ये पाके मीठे आंब
हो। नंदराय के लाडिले याही को लई बोलि
नाहिं नरहत पुकारि हो मत कंचुकि बंद खो

(ले।परमानंदप्रभुप्योरंमीऽप्योदंपतिरसइ
ता।सुरतसमागमरस्मरछ्योनदीयमुनाकेरत
॥

समूप वसंत । गोडी 63

ललना । खेले फागु बन्यो ब्रजऊ सखा लिये नंद नंदना । बंधा धरे के हृदे डोहोरी युवति यूथ मन नंदना । घरर ते सुंदरि सखी देख नखऊ आनंद कंदना । बाजे ताल मृदंग झांझऊ फगावति गीत सु छंदना । ठांठां आगर आवीर लिये कर ठांठां लिये वंदनो । हाथ लिलिये कनक पिचकाई छिरकति चोवा चंदनो । अबीर सब बसन यो मगन मानऊ नवहृदे आनंदनो । दास चतुर भुज प्रभु सब सुखनिधि गिरिधर विरह निकंदनो । मनको मोहनां बोले हो होरी । इत धर मिले मनोहर ओरी । नव ल फागु नव केलि नवल रंग नव वसमाऊ सब माऊ नयो री । बाजे ताल मृदंग झांझ ऊ फगोरी रागमुरली धुनि थोरी । गावत वे त गोप बालक संग किलकित फिरत घोष

कीरवोरी। श्रवनसुनतसबगोकुलनारी
साजिसिंगारचलईएकठोरी। निकसिधाय
मुदितमंदिरतेजुवतियूथसंगराधागोरी।
एकन्हअरगजाअंगरलियेकर एकनिलई
उरदअकरोरी। एकताकिपियकोंइन
छिरकतिएकनरतिनरिकनककटोरी॥
जेतेबंदनअबीरबलमोहनसेकुमके
मकस्तूरीघोरी। खेलतअतिरसकनरे
परस्परनवलकिसोरअरुनवलकिसो
री। फगुआमिसपरसतिसुंदरअंगग
हिपटकजोरा कजोरी। कहतनब
नेंकुकथाकीछबिजोतुत्रिभुवनसौभ
गसबघोरी। ध्यानचईतिनकीसुधि
ऐसीसमुझिनपरेकौनकोकौरी॥
१०१ अंतरतेंअनुरागअगटकैप्रेमसिंधु
मरजादातोरी। सुरबिमानकोतूहल

मेले सौ सो खेलि तो देखि सुख सोरी॥ चतुर भुज प्रभु गिरिधर नवेद सुख बि तवतिव धूसमूह वकोरी॥ ढोट डोरी। सुंदर स्याम राधिका गोरी। रा ऊतर सि क मनोहर जोरी। नंदनंदन बृषभानु किसो री॥ ३॥ फ आरु ताल मृदंग बजावत। गोरी राग रसभरें गावति। नवसंत सजें सकल ब्रज नारी। प्रमुदित देत भांवती गारी। भरि अरगजा कनक पिचकाई। स्यामसुंदर के सन्मुख धाई। नवल त्रिबोरस रवा संग लीनें। फिरत उ वत फेट नि कीनें। मच्यो खेल दुहु ओर परस्पर। बाढ्यो रंग फागु के औसर। फ गु आमिस मोहन को घेरति। सादर बदन कमल तन हेरति। कुउ डोरि वकु दिसतें दोरी। मदन गोपाल लगड़ भरि कोरी। सोंधे व कुल सी स तें न्हायो। रंग गेवसत कियो मन

गायो। नैंन आंऊिरोरी सुखमाउति प्रेम
आलिंगन दै दै छाउति। ऊरिन ऊंचे कुंजा के
लै लै लोवति। अंतर को अनुराग जनावति। मगन भई तिन सुधि न संभारति। आनंद नाथ परस्पर वारति। चतुर
दास सुजंस सुपिय सुख सागर। सुर नर
मोहे गिरिधर नागर॥ ४॥
खेलत नंद किसोर ब्रज मैं अति रस बाढ्यो डोडो डोरी। गोरी राग बजावत गावत मधुर मुरलिका घोर। ब्रज मै अति रस बाढ्यो। ध्रु। कटि पीरो पट फेटि बनी छवि सीस चंद्रिका मोर॥ मनमथ मान हरत हैं सिखित वनि चप लै नैंयन चित चोर। बोलके बृंद स्याम सं ग सो मिलत उतसमूह ब्रज नारि। बिबिध सिंगार सजें मिलिकें उनि देति गावती गारि। देखि समों ऊंमदन मोहन को धारि

हदेउछ्वास। तिनमेंमुख्यराधिकानागरि
सबही सुखकी रासि। ऊधेरिकाउ मुरज
डफबाजत मृदंग उपंग ताल। डफ दिसमां
च्योरवेल परस्पर घोषरायदर बार। चोवो
अगर अरगजा चंदनकेसरि सुरंग मिला
या। तकिरत फनि गोपालहि छिरकतिक
रनिकनककिवकाय। उतमनेमुदितसि
येंकरसोंधोसरवनि महितबलबीर।।
युवतिकदंबरिफपरबरखतसुरंगगुला
लअबीर। युवतियूथ पेलिसन्मुखके
मोहनपकरेंजाय। काजरनेंनां आंजि
प्रीतमके मुरलीलईछिडाय।। पिय
प्यारीकी जोटबनीई अंबरसोंपटजोरि।
सेनहिसेनपरसिकरसोंकरहसतिसब
मुखमोरि।। नगननईतिनकी सुधि भूली
है देगयो अनुराग। यहसुखतीनलोक
मेंनांहीजोपितिकोंजनिभागु।। वीर

हार अंगराग भीजे कीच मचावासु बरवोरि
मानहु प्रेम समुद्र अधिक बेलें उमगि च
ल्यो मति कोरि। चतुर्भुज दास बिला
स फागु को कहत न बरन्यो जाय। ली
ला ललित देव गन मोहे गिरिगोवर्धन
राय॥ मुरली अधर धरैं नंद नंद
न होहो होरी बोलत। लिये संग सखा सं
ग बदेत को कबऊ खोर निडोलत॥ पहि
रें बसन आने के बरन तन नील पीत सित
राते। सुरंग गुलाल अबीर फेंट भरि फि
रत मद्दार समाते। बाजत ताल मृदंग
झांझ डफ अरु बसुरी पुरयो रे। गावत स
रस धमारि नवल रंग रसिक चंदु लीजोरे
श्रवत सुनत सब गोकुल नारी घर रतें
उठि दोरी। सजें समाज सबै बिलसि आ
ई नंदराय की पोरी। पहिरें दिव्य कटा
१०१ व की चोली नीतन नूम क सारी। सुनी

अंनके सोरु उनगावति परमभांवतीगारी। विविधि सिंगार वेंनेस वहे अंग अंनूप ननी नावेसा। मुख दिति बोलने नेकउले सिरसे दुरमांगसु देसा। केहसरी अरुपोतम फ तूली अरु गरुमो तिनि हारा। कर केंक न कटि किंकिनि की छवि पगनूपुर रुन कारा। अलकावली अरु मृगमद को बरनिस के मुख भांती। खुटिला खुनी रुचिर नव बेसरि दूर करत रवि कांती॥ इन में मुख्य राधिका नागरि सव दिन ऊपर सो हो। ऊटिलक टाफागु के ओसर मोद न को मन न मोहे। कनक बरन वृषभानु कि सोरी नवघन नंद किसोरा। प्यारी हिवा उयोग नो चितनयो चितवत विय की ओ रा। बालवृंद न छत्र निमद्रियां छवि जा गते गोविंदे प्वालिनी मनो चकोर की सेनां

डरतिपूरनवेदे। छूटीतरुनिमहामदमाती
केलअंकुसनहिमानें। सोंधेबहुतगो
पालेलालकेने नेनितकिरतानें। उतबू
कावंदनअंगुरिसन्मुखग्वालउगवत।
इकदिसमांच्योखेलेपरस्परहितति
नरतगेरावेत। नरनारिनिकेचोंखपरी
ल ऊियकमेंनिमारमचारी। रूपेसुमटरन
धीरमनकोकेउतइत [illegible] उद्वटनआ
ई। युवतियूथपेलिसन्मुखकेहिततित
सखानेआये। आयगयौपटस्यांमसुंदर
कोजातकेवअनवआये। कोकरतेंगुर
लीपैभाजी कोमतिमोतिनमाली। कोफे
टाफुकइतहमारेफगुआदेकगोपाल
चंद्रावलिवोवाचंदनलेसीमस्यामकेंना
वति। ललितात्रिसाखानेंनन्दाकिमुख
२ योरीडुरदलगावति। कोप्यारीकोअंबर

लेके पियकेपटसोंमोरे।कोकदेकरछुं
डारस्यउ तेकोककदुसतिमुखमोरे।मग
नभईतिनकोसुधिउर आनंदनेसमारी
आलिंगनदेश्यामुखविंवतिमानछुरेक त
निधिपाई।करनश्नयेवसनजोऊरंगकी
चधरनिपरबाढी।टूटेहारछुटीअल
कावलिफटीचंचुकीगाढी।सवसुखळी
तिचलीऊरसुंदरिगईयमुनाकेकूलनि।
सीसोखलितनिहारिदेवगनवरखनसा
गेफूलनि।ईहविधिखेलेफागुसंग
मिलिइतगोविंदउतगोरी।चतुरभुज
दासरहोऊरअविचलराधागिरिधर
जोरी। मदनमोहनगहुवरव
नेखेलतसरसधमारि।सेंदुरभरिबळ
मंगेआईसवेऊरनारि।फूलेलतावळ
दिसवरनरवळमांति।नयोउल्लासससवे

ऊंचो हि कोकिलकुल किलकांति। गुंजत मधु
पसुहायेअवनसुनतसुखहोय। बैसोनिर
खिके नवरंगउठि धायेसबकोय। कोऊ
तेतालपखाउजआवजउफमुखचंग। बेनु
मधुरधुनिकूजतस्यांमसुंदरतोसंग। रेरा
ततोनाबानीगानीसुघरसुदेस। बोल
तहोहोहोरीजयेंअधिककेआवेस। चोवा
अगरअरगजाकेसरमिलीसुरंग। छिर
कतेनरि पियकोंइसोनितछीटेंअंग।
तेबसखिसातपांचमिलिमोहनपकरे
धाय। सोंधोछांहिनयनमेंमुरलीलई
छिडाय। एकसखीकरमेंलेफिरतमं
डलीओरि। तिनहिमध्यब्रजपतिगति
लेतचितेचितेचोरि। परसतकरउरबो
लीबोलीठोलीडोरि। सुंदरमुसिकाय
केंदेतपरस्परगारि। रदतोचीरदुमर

समयवेसृत मो ३।

प्रतिद्रुटतमोताहार। नयोमगनेमने
मेबेकोतनेतऊसंभारि। अंबरकेरति
डरिपरसबसुदेतितियाग। प्रेमागतेउ
तिरससबेनेईमनोहरफागु। चतुरचुऊघमु
गिरिधरसंगबाठ्योरंगअपार। देवेबे
धूअतिलालेखिवाइतिघोषबिहार।

गोकुलरायकुमार। कमलद
लेलोचनां। अदेखिंघडुवारकमलदल
लोचनां। नखचिरवन्हेबबनाय। सुंदरतो
अतिचारु। रसभरेनंदकिसोर। निकसेखे
न लेफागु। मधुरबेनुकरधरें। गावतगोरी
राग। आयेतहांब्रजबोहटे। लीयेंसखा
सबेसंग। नवनूतननवबसन। सोहतसां
वेसअंग। उपमाकहीनजाय। सुंदरमुखे
क आनंद। बासेंबृंदनछत्र। प्रगटेपूरनचंद।
बाजततालमृदंग। आवजरुफमुरचंग।
मदनमेरिसुरबीन। जडुर ढोलकउपंग।

अवनमुनतिबलिदोरि। गृह्र तें बूझै नारि॥
तिनमें परमसुदेस। श्रीराधा अतिसुकुमारि।
बनेंबीर आनरेन। सब तन बिबिधि सिंगा
र। कंकन अरु किंकिनी। उरगज मोतिनहा
र। नकबेसरि ताटंक। केसरी अनुभांति
वोकोबनी ऊराय। हरि देखत रबि कांति॥
सेंदुर तिलक तें बोले। खुटिला बनें बिसेष।
सोहत केसर आड़ि। झुमझुमका झुर
रेख। अफुलित आनंदभयो। चितवत
हरि मुख ओर। मानकु बिधु ब्रातम मि
ल्यो। सादर वाक्कव कोर। नेंन रूप सम
रे। बार बार निहारि। गावहिं रूम कचैत
। वीख सुहाई गारि। वौवा वेदन अगर॥
सोंधे सजे अनेक। पिव काई कर लियें॥
धाई एक तें एक। अति चरि बांधी फेंट।
११० सुरंग अबीर गुलाल। डक्क दिम मांथ्थो

खेल। इत गोपीउत ग्वाल। नरनारिन मंडलीं
ख। छिरकत तकि तकि रछेह। नर तन इत्र
तिमीर। मान कुबेर खत मेह। बरन रमयेब
सन। अंग निर हूँस पटाय। कौंडर सब
समगन। आनंद उरन समाय। व्रज युवती
न मतो मत्यो। मुरख न ऊनावति वेनु। पक
रि नें कु घनस्याम। मिल वतिर तऊत सेन।
जुवति यूथ दल चेलि। दीने सखा भजाय।
कहुति कहा मतो करहि। अब तो कछु न सु
हाय। बहुतिन बांधे कछू। बचनेगारि अरु
गीत। कउने ऊरि वकुं ओर। भाय गयो
पट पीत। नवल कुअर भीनीयें। अबंसो
मुरली येकु। राधा दिकर कुहुशार। हमारे
फगुआ देकु। फगुआ देकु न देकु। छाड
कुओर उपाय। हमारो भायो करउ। छूटो
मो यो नाय। प्यारी पियसों कहे। अति

माठेमृदुबोल। काजर आंजे नेंन। गोरादूरदकपोल। मुखमांडे छबिनई। कोटिमदनसिरताऊ। त्रिभुवनसौंनगलिये। मानों व्याहन आयो आजु। दीरतिआ बिवलरहो। तुमरयहुबेऊबास। श्रीगिरिधरकोऊनुगान। नितकरऊचतुरभुजदास॥ बरसानेंकीख्यालिनिहो। खेलतफागबसंतहोसंककीऊकीनमानही। मातपितासुतकेतहो। बंशअरुबंशावलीमधिनायकराजितराधाहेसदुऊरूपनुहोवनोसोतासिंधुअगाधाहेसकलमाऊसबसजिवलीआईबटसंकेतोपठइसखीए कआपुनीनदकुऊरकेहे तोहेलीसबचतुरसिरोमनिखेलनकोरसफागुहेरसिकअरिवरखमानुकीतुमसों
१११

है अनुराग हो राम कौ छइ सियो कधो
सुनु ऊसखा श्रीराम जु ईम पस्व दिन्नो
ईस बे ठन मद जाति से मां मञ्जु बेगि वले
ल ऊसबर्खो दे दिरवा औ जेपने डाध्यहुो।
ऊसे बकू रिनि श्रावही सबे सा ऊस कि
साथ हो जानंता ओ बीर गुलाल से दे
ऊति सान धुरायहौ बकूत कलस सों
धोजरी कूमर सरि विव कांयहौ दलन
बादल में दै रिविवें सन्मुख दोरी धायहुो।
[illegible] मेघघटा
ज्यों बरख हों जे कुत रवेल मचायहुो।
कमल निले नोला सी के ऊसुम गदु
कदे मारिहुँ मुर भागे बल मोड़ ना डो
दो करि सब नारिहुँ वडा वलि बंजाड़े
स्यामा गई श्री स्याम जु सखा गये सब
रले

जाउकेंलियेछिनायदमामहौसंकर
खनसोधेनरेस्यामनेरे मुडे़मारिहौ।
आननसीससवारिकेंजेबबनायो
नारिहेंरेसबमनेईसिबसुंदरीलीला
कहीनजायमौचतुरभ्रुउभ्रुइन
बसकियेगिरिगोवर्द्धनरायहै॥

श्रीहरि ॥ गोकुल सकल ग्वालिनि घर खेलै फागु। तामें श्री राधा लाडिलीजू कौ परम सुहाग। रूपनिमिलि गावति केसी हम कनंद के द्वार। आऊ परबसि खेल लये हम तुम नंद कुमार। रसिक और सुंदर बर राधा जीवन प्रान। मोहन दरस दिखावो करहु तो नंद की आन। प्रीति प्रगट गोकुल मनई अब के होकर छुवेवाउ। जसोदा के सुत चित चुभि रही वे तुम्हारी मुसकानि। अब नैन तरु कि उपजै सहुऊ परी यह बानि। हुरत का कान लै पाये राधा मेरी आं केवार। कनेक कोउ लीके सर नेरि नेरि लैदौरी ब्रजनारि। नरोमरोस खि स्याम को पीत विछोरी पाग॥

देहगेहसुधि विसरीमदनदेनेअनुराग। वोवास्तारवडऊमक्कमागोयामेदेऊ वादा। इसिइसिइरिपरडारतिअह नानाफुलवादा। छूटेकेसकेंवुकिवे घटूटीमोतिनिमाले। करतलताल ५८८ वजावतगावतगीतरसालो। गगन हसिरर विमाननिछायोसुरनरकौतकभूलेउ ऊजेसवऊधरही आनंदवरखतफू ला। लालगोपालकृपाविनुइडसु खलहेनकोय। इरिवृषभानुकिसो रीकीकथामगनमनहोय।
माईरीरंगेलोमोहनोकेंत्सरश्रीगि रिधरखेलेफागु। जिंहजिंहमारग ५९६ झिह्मालीझोंनिकसीतिहिबार। तिहि तिहिमारगतिहगलीमोंकोरोकत

आय आगवार। पद्दिये गेंदुचलाय
के मेऽतिधाममें धाय। तापाछें हुसियो
कधौनेंऊ देने रागें दबताय। मैंजेंदु के कर
केंदियो छिरकत ऊमऊमनीर गद्दिऊ
घनेबरसांवरेमेरो मांग्योबदनेओबीरड़ो।
संगसखासबओरिकें मेरेआगें नचावरि
मेंलि। सबनिसुनतोमोमोयोंकदेनेऊते
मेरेसंगखेलि। होंसऊबीउरवाजितमो
ड्याखी आंग आंगोर।। बचनरचनक
रिसांवरेमोसोंलईसिकतिरतिओरि।।
श्रीगिरिवरधारीलालको मोपें खेलन
बरन्यो जाय। तिन्तोरेसहचरिसबे लघु
गोपालबलिजाय।

74